OM - 4 - 2020 DELHI FINAL_Page 1 and 2 16/05/2020 4:52 PM Page 9

कथा सरिता...

जीवन वही है जो आप हैं

एक छोटे से गांव के बाहर सुबह-सुबह एक बैलगाड़ी आकर रुकी। और उस बैलगाड़ी में बैठे हुए आदमी ने उस गांव के द्वार पर बैठे हुए एक बूढ़े से पूछा, इस गांव के लोग कैसे हैं? मैं इस गांव में हमेशा के लिए स्थायी निवास बनाना चाहता हूँ। उस बूढ़े ने कहा- मेरे मित्र, अजनबी मित्र, इसके पहले कि मैं तुम्हे बताऊं कि इस गांव के लोग कैसे हैं, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उस गांव के लोग कैसे थे, जिससे तुम आ रहे हो?

उस आदमी ने कहा- उनका नाम और उनका ख्याल ही मुझे क्रोध और घृणा से भर देता है। उन जैसे दुष्ट लोग इस पृथ्वी पर कहीं भी नहीं होंगे। उन शैतानों के कारण ही, उन पापियों के कारण ही तो मुझे वह गांव छोड़ना पड़ा है। मेरा हृदय जल रहा है। मैं उनके प्रति घृणा से और प्रतिशोध से भरा हुआ हूँ। उनका नाम भी न लें। उस गांव की याद भी न दिलाएं।

उस बूढ़े ने कहा- फिर मैं क्षमा चाहता हूँ कि आप बैलगाड़ी आगे बढ़ा लें। इस गांव के लोग और भी बुरे हैं। मैं उन्हें बहुत वर्षों से जानता हूँ। वह बैलगाड़ी आगे बढ़ी ही थी कि एक घुड़सवार आकर रुक गया और उसने भी यही पूछा उस बूढ़े से कि इस गांव में निवास करना चाहता हूँ। कैसे हैं इस गांव के लोग?

उस बूढ़े ने कहा- उस गांव के लोग कैसे थे जहाँ से तुम आ रहे हो? उस घुड़सवार की आंखों में आनंद के आंसू आ गए। उसकी आंखें किसी दूसरे लोक में चली गईं। उसका हृदय किन्हीं की स्मृतियों से भर गया और उसने कहा, उनकी याद भी मुझे आनंद से भर देती है। कितने प्यारे लोग थे। और मैं दुःखी हूँ कि उन्हें छोड़कर मुझे मजबूरियों में आना पड़ा है। लेकिन एक सपना मन में है कि कभी फिर उस गांव में वापस लौट कर बस जाऊं। वह गांव ही मेरी कब्र बने, यही मेरी कामना है। बहुत भले थे वे लोग। उनकी याद न दिलाना। उनकी याद से ही मेरा दिल टूटा जाता है। उस बूढ़े ने कहा- इधर आओ, हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। इस गांव के लोगों को तुम उस गांव के लोगों से भी अच्छा पाओगे। मैं इस गांव के लोगों को भलीभांति जानता हूँ।

काश, वह पहला बैलगाड़ी वाला आदमी भी इस बात को सुन लेता। लेकिन वह जा चुका था।

शिक्षा : इस पृथ्वी पर आप वैसे ही लोग पाएंगे जैसे आप हैं। आपके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है पृथ्वी! जीवन वही है जो आप हैं।

संगठन शक्ति

एक वन में बहुत बड़ा अजगर रहता था। वह बहुत अभिमानी और अत्यंत क्रूर था। जब वह अपने बिल से निकलता तो सब जीव उससे डरकर भाग खड़े होते। उसका मुँह इतना विकराल था कि खरगोश तक को निगल जाता था। एक बार अजगर शिकार की तलाश में घूम रहा था। सारे जीव अजगर को बिल से निकलते देखकर भाग चुके थे। जब अजगर को कुछ न मिला तो वह क्रोधित होकर फुंफकारने लगा और इधर-उधर खाक छानने लगा।

वहीं निकट में एक हिरणी अपने नवजात शिशु को पत्तियों के ढ़ेर के नीचे छिपाकर स्वयं भोजन की तलाश में दूर निकल गई थी। अजगर की फुंफकार से सूखी पत्तियां उड़ने लगीं और हिरणी का बच्चा नज़र आने लगा। अजगर की नज़र उस पर पड़ी तो हिरणी का बच्चा उस भयानक जीव को देखकर इतना डर गया कि उसके मुँह से चीख तक न निकल पाई। अजगर ने देखते ही देखते नवजात हिरण के बच्चे को निगल लिया। तब तक हिरणी भी लौट आई थी, पर वह क्या करती? आँखों में आसूँ भरके दूर से अपने बच्चे को काल का ग्रास बनते देखती रही। हिरणी के शौक का ठिकाना न रहा। उसने किसी न किसी तरह अजगर से बदला लेने की ठान ली। हिरणी की एक नेवले से दोस्ती थी। शोक में डूबी हिरणी अपने मित्र नेवले के पास गई और रो-रोकर उसे अपनी दुःखभरी कथा सुनाई। नेवले को भी बहुत दुःख हुआ। वह दुःख भरे स्वर में बोला मित्र, मेरे बस में होता तो मैं उस नीच अजगर के सौ टुकड़े कर डालता। पर क्या करें, वह छोटा-मोटा सांप नहीं है, जिसे मैं मार सकूं वह तो एक अजगर है। अपनी पूंछ की फटकार से ही मुझे अधमरा कर देगा। लेकिन यहाँ पास में चींटियों की एक बांबी है। वहाँ की रानी मेरी मित्र है। उससे सहायता मांगनी चाहिए। हिरणी ने निराश स्वर में विलाप किया, "पर जब तुम्हारे जितना बड़ा जीव उस अजगर का कुछ बिगाड़ने में समर्थ नहीं है तो वह छोटी सी चींटी क्या कर लेगी?" नेवले ने कहा, "ऐसा मत सोचो, उसके पास चींटियों की बहुत बड़ी सेना है। संगठन में बड़ी शक्ति होती है।" हिरणी को कुछ आशा की किरण नज़र आई। नेवला हिरणी को लेकर चींटी रानी के पास गया और उसे सारी कहानी सुनाई। चींटी रानी ने सोच-विचार कर कहा, "हम तुम्हारी सहायता अवश्य करेंगे। हमारी बांबी के पास एक संकरीला नुकीले पत्थरों भरा रास्ता है। तुम किसी तरह उस अजगर को उस रास्ते पर आने के लिए मजबूर करो, बाकी काम मेरी सेना पर छोड़ दो।" नेवले को अपनी मित्र चींटी रानी पर पूरा विश्वास था इसलिए वह अपनी जान जोखिम में डालने पर तैयार हो गया। दूसरे दिन नेवला जाकर सांप के बिल के पास अपनी बोली बोलने लगा। अपने शत्रु की बोली सुनते ही अजगर क्रोध में भरकर अपने बिल से बाहर आया। नेवला उसी संकरे रास्ते वाली दिशा में दौड़ाया। अजगर ने पिछा किया। अजगर रुकता तो नेवला मुड़कर फुंफकारता और अजगर को गुस्सा दिलाकर फिर पीछा करने पर मजबूर करता। इसी प्रकार नेवले ने उसे संकरीले रास्ते से गुज़रने पर मजबूर कर दिया। नुकीले पत्थरों से उसका शरीर छिलने लगा। जब तक अजगर उस रास्ते से बाहर आया तब तक उसका काफी शरीर छिल गया था और जगह-जगह से खून टपक रहा था।

उसी समय चींटियों की सेना ने उस पर हमला कर दिया। चींटियां उसके शरीर पर चढ़कर छिले स्थानों के नंगे मांस को काटने लगी। अजगर तड़प उठा। उसके शरीर से खून टपकने लगा जिससे मांस और छिलने लगा और चींटियों को आक्रमण के लिए नए-नए स्थान मिलने लगे। अजगर चींटियों का क्या बिगाड़ता? वे हज़ारों की संख्या में उस पर टूट पड़ी थीं। कुछ ही देर में क्रूर अजगर ने तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया।

निर्दोष को सजा

बहुत समय पहले हरिशंकर नाम का एक राजा था। उसके तीन पुत्र थे और अपने उन तीनों पुत्रों में से वह किसी एक पुत्र को राजगद्दी सौंपना चाहते थे। पर किसे? राजा ने एक तरकीब निकाली और उसने तीनों पुत्रों को बुलाकर कहा-अगर तुम्हारे सामने कोई अपराधी खड़ा हो तो तुम उसे क्या सज़ा दोगे?

पहले राजकुमार ने कहा कि अपराधी को मौत की सज़ा दी जाए तो दूसरे ने कहा कि अपराधी को काल कोठरी में बद कर दिया जाये। अब तीसरे राजकुमार की बारी थी। उसने कहा कि पिताजी सबसे पहले यह देख लिया जाये कि उसने गलती की भी है या नहीं।

इसके बाद उस राजकुमार ने एक कहानी सुनाई - किसी राज्य में राजा हुआ करता था, उसके पास एक सुन्दर-सा तोता था। वह तोता बड़ा बुद्धिमान था, उसकी मीठी वाणी और बुद्धिमत्ता की वजह से राजा उससे बहुत खुश रहता था। एक दिन की बात है कि तोते ने राजा से कहा कि मैं अपने माता-पिता के पास जाना चाहता हूँ। वह जाने के लिए राजा से विनती करने लगा।

तब राजा ने उससे कहा कि ठीक है पर तुम्हें पांच दिनों में वापस आना होगा। वह तोता जंगल की ओर उड़ चला, अपने माता-पिता से जंगल में मिला और खूब खुश हुआ। ठीक पांच दिनों के बाद जब वह वापस राजा के पास जा रहा था तब उसने एक सुन्दर-सा उपहार राजा के लिए ले जाने का सोचा। वह राजा के लिए अमृत फल ले जाना चाहता था। जब वह अमृत फल के लिए पर्वत पर पहुंचा तब तक रात हो चुकी थी। उसने फल को तोड़ा और रात वहीं गुज़ारने का सोचा। वह सो रहा था कि तभी एक सांप आया और उस फल को खाना शुरू कर दिया। सांप के ज़हर से वह फल भी विषाक्त हो चुका था।

जब सुबह हुई तब तोता उड़कर राजा के पास पहुँच गया और कहा- राजन मैं आपके लिए अमृत फल लेकर आया हूँ। इस फल को खाने के बाद आप हमेशा के लिए जवान और अमर हो जायेंगे। तभी मंत्री ने कहा कि महाराज पहले देख लीजिए कि फल सही भी है कि नहीं? राजा ने बात मान ली और फल में से एक टुकड़ा कुत्ते को खिलाया। कुत्ता तड़प-तड़प कर मर गया। राजा बहुत क्रोधित हुआ और अपनी तलवार से तोते का सिर धड़ से अलग कर दिया। राजा ने वह फल बाहर फेंक दिया। कुछ समय बाद उसी जगह पर एक पेड़ उगा। राजा ने सख्त हिदायत दी कि कोई भी इस पेड़ का फल ना खाएं क्योंकि राजा को लगता था कि यह अमृत फल विषाक्त होते हैं और तोते ने यही फल खिलाकर उसे मारने की कोशिश की थी। एक दिन एक बूढ़ा आदमी उस पेड़ के नीचे विश्राम कर रहा था। उसने एक फल खाया और वह जवान हो गया क्योंकि उस वृक्ष पर उगे हुए फल विषाक्त नहीं थे। जब इस बात का पता राजा को चला तो उसे बहुत ही पछतावा हुआ, उसे अपनी करनी पर लज्जा हुई।

तीसरे राजकुमार के मुख से ये कहानी सुनकर राजा बहुत ही खुश हुआ और तीसरे राजकुमार को सही उत्तराधिकारी समझते हुए उसे ही अपने राज्य का राजा चुना।

शिमला-हिमाचल प्रदेश। सेवाकेन्द्र पर ज्ञान चर्चा के पश्चात् हिमाचल प्रदेश के पंचायती राज मंत्री वीरेंद्र कंवर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कृष्णा। साथ हैं ब्र.कु. प्रकाश,माउण्ट आबू।

राजौंद-असंध(हरि.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा व्यापार में उन्नति' कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री कमलेश ढांडा, ब्र.कु. मेहरचंद,करनाल, नगरपालिका चेयरमैन गुड्डी प्रमोद राणा, पूर्व कार्यकारी अधिकारी नगरपालिका रामकरण राणा,कैथल, ब्र.कु. राजसिंह तथा अन्य अतिथिगण।

सादाबाद-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व सांसद राजेश दिवाकर की धर्मपत्नी व भाजपा जिला उपाध्यक्षा श्वेता दिवाकर, समाजसेवी श्वेता गोयल,हाथरस, मुरसान की पूर्व चेयरमैन किरण शर्मा, डॉ. ज्वाला सिंह, मुरसान के पूर्व चेयरमैन गिरीराज किशोर शर्मा, ब्र.कु. भावना तथा अन्य।

भुवनेश्वर-नागेश्वर तंगी। ज्ञान चर्चा के पश्चात् पूर्व सी.एम.डी.डॉ. एस.के. तमोटिया, भारतीय विद्या भवन,नालको को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. इंदुमती। साथ हैं उनकी धर्मपत्नी श्रीमति तमोटिया, ब्र.कु. विजय तथा अन्य।

बरनाला-महेश नगर(पंजाब)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सरदार जगमीत सिंह पानेसर,अध्यक्ष, सीनियर कमेटी मेम्बर्स नरेन्द्र शर्मा, मंगत राय बंसल मंगा,महेश नगर वेलफेयर एसोसिएशन तथा अन्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बृज बहन। साथ हैं ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. पुष्प, ब्र.कु. सोमा, एस.डी.ओ. बी.एस.एन.एल. विजय शर्मा तथा प्रो. सीमा शर्मा।

भादरा-राज.। होली मिलन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए भारत सैनिक कॉलेज के प्रिन्सीपल अमरदीप सिंह, बिज़नेसमैन विकास सराफ, व्यापार मंडल के पूर्व अध्यक्ष चम्पा लाल गोयल, बिजली बोर्ड से दीवान सिंह, ब्र.कु. चन्द्रकान्ता तथा अन्य।